International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 925-927

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 925-927
www.allresearchjournal.com
Received: 25-01-2017
Accepted: 29-02-2017

प्रदीप कुमार
गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार
गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ रचनाकार यात्रीक आधुनिक ग्राम्य जीवनक चित्रण

प्रदीप कुमार

सारांशः
श्री 'यात्री' मैथिलीक शीर्षस्थ रचनाकारमे सँ एक छथि। ई मूलतः कवि–उपन्यासकार छथि। मुदा अन्य विधामे सेहो हिनक रचना ठाम–ठाम भेटैत अछि। गीत, यात्रा, संस्मरण तथा रिपोर्ताजक अतिरिक्त हिनक किछु स्तम्भ लेखन उपलब्ध। अछि। मैथिली साहित्यमे कवि 'यात्री'क पाँचटा प्रकाशित पोथी दृष्टिपथ पर अबैछ जाहिमे 'चित्रा', 'पत्रहीन नग्न गाछ' क्रमशः 1949, 1968ई. मे प्रकाशित कविताक संकलन थिक। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर 'यात्री'कें भारत सरकारक प्रतिष्ठित साहित्यिक। संस्था 'साहित्य अकादमी, नई दिल्ली' द्वारा 1968ई. मे पुरस्कार सेहो प्रदान कयल गेल छनि। श्री 'यात्री'क मैथिली उपन्यास 'पारो', 'नवतुरिया' आ 'बलचनमा' प्रकाशित अछि।

प्रस्तावनाः
मैथिली साहित्याकाश मध्य आधुनिक मैथिली साहित्यक विपुल भंडारकें अपन विविध रचना सँ भरनिहार कवि, उपन्यासकार; संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, बंगला भाषक मर्मज्ञ ओ विशिष्ट विद्वान श्री वैद्यनाथ मिश्र मैथिलीमे 'यात्री' ओ हिन्दी साहित्यमे 'नागार्जुन' नामे जानल जाइत छथि। अपन व्यंग्य वाणक नोक सँ, कवि–कर्ममे जे नित्यहु लागल रहलाह निधोख भ, समसामयिक घना, सामाजिक विवादास्पद रीति–कुप्रथा, अंधविश्वास पर जे कटु सत्योद्घाटन कयलनि तकर निदान हेतु काव्यहिक माध्यमे लोकक बीच जागरण अनलनि, सत्य मात्रक अभिभाषण कयनिहार भेलाह श्री 'यात्री'।
स्वातंत्र्योत्तर भारतक भाषा–साहित्यक विविध विधामे पाश्चात्य साहित्यक प्रभावहि नवजागरण आयल। मैथिलीमे एहन स्थितिक आगमनमे किछु विलम्ब अवश्य भेल, मुदा एहू ठाम रचना संसारमे देश–दशा, समाज–सुधार विषय सभ साहित्य रचनाक माध्यम बन लागल। एहने समयमे 'यात्री'क पदार्पण अपन मधुवर्षी लेखनीक संग भेल। ओ अपन माटि–पानि, भाषा–साहित्यक केहन प्रेमी छलथि तकर उदाहरण हुनक समकालीन इतिहासकार डा. जयकांत मिश्र 'चित्रा'क भूमिकामे कहि गेल छथि–
''आइ सँ सोड़ह वर्ष पूर्व जे ई यात्रा आरंभ कयलन्हि से एखन धरि समाप्त नहि भेल छन्हि, एहि बीच हिन्दु सँ बौद्ध–बौद्ध सँ साम्यवादी, साम्यवाद सँ प्रगतिवाद, कतय–कतय ने ई गेलाह परंच हमरासबहिक गौरव अछि जे मिथिलाक प्राचीन, मध्यकालीन वा आधुनिक मिथिलाक माटि–पानिकें, बोन बाधकँ, हर जनकें–कोशी लखिमाकें नहि विसरि सकलाह।''
कवि 'यात्री'क प्रसंग मिश्रजीक उपरोक्त टिप्पणी समीचीन अछि। प्रगतिवादक समर्थक 'यात्री'क अधिकांश कविता जँ मुक्त छनद, अतुकान्त तथा परम्परा सँ हटिक अछि त किछु कविता छनदोबद्ध, तुकान्त ओ परम्पराक पोषक सेहो। दलित–शोषित मानवक पक्षधर, साम्यवादक स्वर 'यात्री'क काव्यमे प्रायः ठाम–ठाम भेटैछ। हिनक पहिल काव्य–संग्रह 'चित्रा' मे विविध विषयक अट्ठाइस (28) गोट विता संकलित अछि।
यात्रीक 'चित्रा' मे तथा ओकर वादक कवितामे उक्त स्वर क्रमशः आओर अधिक मुखर भेल अछि। किन्तु, एहि प्रकारक कविताक अतिरिक्त हिनक स्वानुभूमूलिक कविता सेहो अछि जे मनोभावक सहज स्फुरणक कारणें, उपस्थापन शैलीक विलक्षणताक कारणें तथा व्यक्तिगत समस्याकें सार्वभौम सत्ता प्रदान करबाक कारणें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। आचार्य रमनाथ झा एहने काव्यकें हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना मानलनि अछि। हुनक मतक अनुसार ''ई साम्यवादी साहित्यक विवेचन ठेठ मैथिली भाषामे, बन्धनहीन छन्दमे, कएल से हिनक काव्यक वैशिष्ट्य अवश्य थिक, किन्तु यदि आओर मूल रूपें हिनक काव्य–प्रवृत्तिक विश्लेषण कयल जाय तँ हिनक कविताक ओ स्थल अतयन्त उत्कर्षपूर्ण प्रतीत होइत अछि जाहि ठाम ई अपन वादक प्रचारक व्यक्तित्वकें त्यागि अकृत्रिम भावें अपन रागात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्ति करैत छथि। वस्तुतः यात्रीजीक ओहने चित्तवृत्तिक द्योतक रचना हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक।''

एहन रचनामे अग्नि प्रणाम, गामक चिट्ठी, हिमगिरिक उत्संगमे, कृतिका नक्षत्रमे, भावना, सिनुरिया आम आदि कतिपय कविताक नाम गनाओल जा सकैछ। हिनक 'अन्तिम प्रणाम'क मार्मिकता हृदयकें झकझोड़ि दैत अछि–

कर्मक फलभोगथु बूढ़ बाप/हम टा सन्तति, से हुनक पाप
ई सोचि हौन्हु जनु मनस्ताप/अनको विसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम

मिथिलाकें हिनक ई प्रणाम भलें अन्तिम नहि रहल होअओ, किन्तु मैथिली रूढ़िवादी इतिवृत्तात्मक काव्यकें धरि अवश्य हिनक प्रगतिवादी कविताक अन्तिम प्रणाम सिद्ध भेल; भलें गाम–घरक लोक हिनक नाम विसरि गेल होइनि, किन्तु मैथिलीक आधुनिक कालक इतिहासमे हिनक नाम तेहन ने अमिट भऽगेल छनि जे साधारणी छात्र कथमपि ओकरा बिसरि नहि सकैछ।

एक दिस ई माँ मिथिलाकें अन्तिम प्रणाम करैत देखल जाइत छथि मुदा दोसर दिस स्वयंके मैथिल होयबाक कारण गौरवान्वितो अनुभव करैत छथि, तकर कारण–

अहिंक अणु–अणुसँ भरल जें देह/अहिंक स्फूर्तिक स्पन्द जें चैतन्य
अहीं, मिथले, जें कि जन्म स्थान/जें कि मैथिल, धन्य तें हम धन्य

प्रतिपल चिन्ताक लाबापर चढ़ल मनुष्य कोना प्राकृतिक आनन्दकें छनी भरि प्राप्त करबा ले' बेहाल रहैछ, कोना ओकरा प्रकृति चुम्बक जकाँ घीचौत रहैत। अछि, एहि भावक तीव्र अनुभूति 'सिनुरिया आम'क निम्नांकित पांती करबैत अछि–

किछु होअओ, भावीक चिन्ता नहि करी
एखन तँ झरकल नयनकें जुड़ा ली तत्काल
दिव्य ओ अभिराम
करै अछि आकृष्ट रहि–रहि ठाढिपर लटकल
सिनुरिया आम।

एहिमे भविष्यक चिन्ता छोड़ि सद्यरूप्राप्त सुख भोगबाक तृप्तिजन्य आनन्द भेटैछ।

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कहैत छथि– ''अभिव्यक्ति–शैलीमे तँ ई क्रान्ति उपस्थित कऽदेल। मैथिली साहित्यमे हिनकहि टा भाषा यथार्थ रूपमे लोकभाषा थिक। किन्तु अपन प्रतिभाक स्पर्शसँ ओ ग्राम्य भाषाकें साहित्यिकता प्रदान कयल। हिनक रचनाकें जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान करैत अछि से थिक यैह स्वाभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति जाहिमे व्यंग्यार्थ बेस चमत्कारक होइत अछि।''

बहुविवाह आ बालविवाह, जे मिथिलाक अभिशाप छल, एहि दुनू। विषयपर बूढ वर ओ विलाप'मे अग्निस्फुलिंग छिटकल अछि, जे समाजक महन्थक चानि छक दऽ दागि दैत अछि–

अगड़ाही लगउ बरु बज्र खसउ/एहन जातिपर बरु धसना धसउ
भुकम्प होउक बरु फटौक धरती/माँ मिथिला एहिए कऽ की करती।

मैथिली साहित्य जगत में कवि बैद्यनाथ मिश्र यात्री जी एवं हिन्दी साहित्य जगतमे नागार्जुनक उपनामसँ ख्याति प्राप्त कएनेछथि। भुवनजीक पश्चात् यात्रीजी मैथिली काव्य परम्पराकें आओर अधिक नवीनोन्मुख करबाक प्रयास कएल। भावक क्षेत्रमे निष्क्रिय आत्माभिव्यक्तिक स्थान पर समाजक यथार्थ चित्रण करब ई विशेष। श्रेयस्कर बुझल। आरम्भ मे ओनारीक सामाजिक दुर्भाग्यक चित्रण कएल अपन कविता 'बुढ़वर' ओ 'विलाप' शीर्षक उत्कृष्ट रचनामे। एहि मे ओ बाल–विवाह प्रथाक आलोचना कएल जकर कारणें अगणित संख्या में कन्या विधवा भएरहल छलीह। एकर रचनाक रीति अछि संवेदनात्मक आ व्यंग्यात्मक। 'कविक स्वप्न' (1941) मे ओ सिद्धान्तक रूपसँ कविताक प्रगतिवादी उद्देश्य घोषणा कर देने छलाह–

तोहर मन दौडैत छह कोठाक दिश
पैघ–पैघ धनिक दिश दरबार दिश
गरीबक दिश ककर जाइत छैक नजरि।
के तकइ अछि हमर नोरक धार दिश।

एइह दीन हिनक नोरक प्रति संवेदनशील भावना विकसित भए हिनकामे। साम्प्रदायिक प्रगतिवादी दृष्टिकोणक रूप में परिणत भेल (1949) ई. मे रचित 'परमसत्य' शीर्षक कविता मे जाकय जाहिमध्य ओ मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी वर्ग संघर्ष सिद्धांतकें कवित्वपूर्ण अभिव्यक्ति देल। मुदा एहि सिद्धान्तक क्रांतिकारी भावना हिनक रचना मे अन्तर्मुखी सएहरहल। वस्तुतः यात्री जी अपनाकें समाजक यथार्थ चित्रांकन मात्र धरि सीमित रखैत छथि। किन्तु एकर चित्रण करबाक प्रणाली अछि व्यंग्य वक्रोक्तिपूर्ण, जेहन नहिते पहिने लिखल गेल आओर वो पश्चाते। आद्यान्त कविकसहानुभूति पूर्ण दृष्टि ओहि यथार्थ वादी चित्रण मे द्भुत मार्मिकताक संचार करैत रहैत अछि। मुदा विशुद्ध कविताक दृष्टिएँ हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना ओएह थिक भावुक्ता तथा रागात्मकताक दृष्टिएँ हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना ओएहथिक जाहिमे ओ बाह्य जगतक विषमताकें बिसरि आत्मजगतकें स्वभाविक निर्णय अभिव्यक्ति कयने एहन रचना बड़ थोड़ अछि जेना– 'हिमगिरि उत्संग' मे 'कृतिकान क्षेत्र मे', 'भावना', 'सिनुरिया आम' आदि। एहि सभक रचना ओ मुक्तवृत मे सएह कएने छथि, तथापि थिक धरि एहन रचना नवीन रीमिक गीत, भाषाक सरलता, भावक सहजता तथा लयात्मक तरलताक दृष्टिएँ। अभिव्यक्ति शैलीमे तँ ई क्रान्ति उपस्थित कएदेल। मैथिली मे मुक्त वृत्तकें इएह व्यापक रूप में प्रयुक्त कएल। संस्कृत निष्ठताक इएह पूर्ण अवहेलना कए देल। अतः मैथिली साहित्य मे हिनकाटिहा भाषा यथार्थ रूप मे लोक भाषा थिक। किन्तु अपन प्रतिभाक स्पर्शसँ ओ ग्राम्यभाषाकें साहित्यिकता प्रदान कएल। हिनक रचनाकें जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान अछि से थिक इएह स्वभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति, व्यग्यार्थ विशेष चमत्कार होइत अछि।

यात्रीजी ने तँ प्रगतिवादक घोषणा कएल आओर ने प्रयोग वादहिकअग्रदूत होएबाक दाबा कएल, मुदा हिनक संग्रह 'चित्रा' 1957 साल में प्रकाशित भेल। पत्रहीन नग्नगाछ मे हिनक नवीन कविताक संग्रह भेल तथा 1970 ई. मे साहित्य अकादमीक पुरस्कारसँ सम्मानित भेल। एहु कवितक संग्रहक रचना सभसँ यात्रीजीक। स्वभाविक व्यंग्य वक्रोतिपूर्ण अभव्यक्ति कौशल एवं प्रगतिवादी दृष्टि–बोधक द्योतन होइत अछि। परन्तु 'चित्रा' मे यदि ओ ग्राम्य जीवनक प्रसादपूर्ण चित्रण कएने छथि तँ पत्रहीन नग्न गाछ मे मील ओ फैक्ट्री मे खटैत–पचौत श्रमिक–मजदूरक दुर्दन्य जो विषाद तथा नगरीय सभ्यता–संस्कृतिक विकृति ओ विसंगति पर दुर्दन्य ओ विषाद तथा नगरीय सभ्यता–संस्कृतिक विकृति ओ विसंगति पर उपहास प्रहार करब दिस विशेष प्रवृत्त छथि प्रयोगवादी वैचित्र्य ओ बौद्धिकताक स्वर से एहि मध्य चित्राक। तुलना में अधिक प्रखर अछि। ऐहि क्रमे प्रस्तुत शोध–आलेखक माध्यमे यात्रीक साहित्य साधना सँ मैथिली साहित्यक विकासमे भेल योगदान मूल्यांकन कएल गेल अछि। एहन कथाकार लोकनिमे जे प्रगतिवादी चेतना से सद्यः प्रेरणा ग्रहण–कएल–यशपाल, नागार्जुन (यात्री) रॉगेय राधव, भेरब प्रसाद गुप्त आदि प्रमुख जा अछि।

निष्कर्षः

मैथिलीमे जतबा उपन्यास अद्य पर्यत्न लिखल गेल अछि ताहिमे

श्री वैद्यनाथ मिश्र (यात्री) (नागार्जुन) स्थान अग्रण्य अछि। श्री मिश्रक नाम से लोकमे भ्रांति भए जाइत अछि कि यात्री आ नागार्जुन दू व्यक्ति अछि कि एके। श्री मिश्र मैथिलीमे यात्री नाम से रचना करैत छथि, आ हिन्दीमे नागार्जून दू व्यक्ति अछि कि एके। श्री मिश्र स्पष्ट अछि जे नागार्जुन यात्री एके व्यक्तिक दू उपनाम थिक। जे प्रायः बहुतो लोक के रहैत छै। हिनक द्वारा लिखल गेल अनेका नेक उपन्यास में समाजक यथार्थ चित्र उपस्थित अछि। लोक–जीवनक सभ आयाम पथार्थक पृष्ठभूमि पर अंकित कएल गेल अछि।

संदर्भ–संकेतः

1. समकालीन उपन्यासमे लोकजीवन आ अंतरदृष्टि–डा. नीता झा
2. मैथिली साहित्यक इतिहास, ले.– दुर्गानाथ झा श्रीश, प्रकाशक–मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
3. मैथिल समाज–पंचानन मिश्र; शेखर प्रकाशन, पटना
4. पारो (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
5. नवतुरिया (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
6. आधुनिक साहित्यक परिदृश्य–देवशंकर नवीन, अंतिका प्रकाशन, दिल्ली